An International Registered Peer Reviewed Bilingual Research Journal

SATRAVACHEE

ISSN 2348-8425

सत्रावची

संयुक्तांक

वर्ष 8, अंक 28-29, जुलाई-दिसम्बर, 2020

संपादक
आनन्द बिहारी

प्रधान संपादक
कमलेश वर्मा

इस अंक में...

संपादकीय

आलेख

07 :: साहित्य और न्यायतंत्र — *बजरंग बिहारी तिवारी*

24 :: केदारनाथ सिंह की भाषा-प्रयुक्ति — *मुक्तेश्वर नाथ तिवारी*

38 :: अज्ञेय की काव्य-संवेदना और काव्यानुभूति — *सुचिता वर्मा*

43 :: छायावादी दौर के 'मुल्की हक' और 'चाँद' के 'अछूत अंक' का विश्लेषण — *दीनानाथ*

52 :: दो प्रगतिशील ब्राह्मण विद्वानों का चिंतन...? — *दिनेश राम*

64 :: समकालीन हिंदी साहित्य में पर्यावरण की चुनौती — *सुरेश चंद्र*

73 :: भाषा एवं साहित्य की विरासत के कवि खुसरो — *संगीता मौर्य*

82 :: श्रीमती हेमंत कुमारी देवी : उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध का स्त्री-पक्ष — *सुरेश कुमार*

91 :: 'ढलान' उपन्यास की मूल चिंताएँ — *किरण शर्मा*

95 :: प्रेमचंद की भाषा-परंपरा के अद्यतन विकास हैं अमरकांत — *विजया प्रियदर्शिनी*

99 :: प्रेमचंद की कहानियों में अलगाव की त्रासदी — *ज्योति कुमारी*

104 :: सत्ता का जनविरोधी और जनतंत्र विरोधी चरित्र और आम आदमी का संघर्ष — *विमल प्रकाश वर्मा*

पाठालोचन

110 :: 'ईदगाह' कहानी का हिंदी-उर्दू पाठ — *आशुतोष पार्थेश्वर*

कवि व्यक्तित्व

130 :: पंकज चौधरी की पाँच कविताएँ और आत्मवक्तव्य — *पंकज चौधरी*

संस्कृति

143 :: हमीरपुर जनपद का सांस्कृतिक इतिहास — *निरंजन कुमार यादव*

वेबिनार

162 :: भारतीय भाषाओं का साहित्य और सामासिक संस्कृति की विरासत — *रामचंद्र रजक*

यात्रा

166 :: बादलों को पर्वतों पर अठखेलियाँ करते देखा — *केदार सिंह*

संस्मरण

170 :: डॉक्टर नामवर सिंह : यादों का गुलमोहर — *अंजय कुमार*

लघुकथा

180 :: 1. पूर्णकाम — *सीताराम गुप्ता*

2. रिश्तों की जड़ें — *सीताराम गुप्ता*

हमीरपुर जनपद का सांस्कृतिक इतिहास

○ निरंजन कुमार यादव

भारत प्राकृतिक विविधता वाला देश है। यह अपनी खूबियों और खामियों के साथ भरपूर जीवन वाला। सदैव खुशियों एवं उत्साह से लबरेज रहने वाला। जीवन के कठिन से कठिन समय का डट कर मुकाबला करने वाला। रंग-बिरंगी उत्सवधर्मी, सौंदर्य और प्रेम से भरा। सबसे अलग और सबसे खास। इसकी कोई शानी नहीं। यहाँ एक तरफ रेत होती धरती है तो दूसरी तरफ हरियाली से ढकी एवं फसलों से लहलहाती धरती। यदि यहाँ एक तरफ ऊंचे-ऊंचे शांत, स्थिर, स्निग्ध पर्वत श्रृंखलाएँ हैं तो दूसरी तरफ गर्जन करता एवं मस्ती से हिलोरें लेता महासागर भी है। अद्भुत है यह अपना भारत देश। अक्षुण्ण सौंदर्य से भरा ! अतीव सुन्दर एवं मनमोहक ! यहाँ पर सभी प्रकार की जलवायु एवं भौगोलिक दशाएँ एक छोर से दूसरे छोर तक मिल जाती हैं। अपने इस देश में प्रकृति और मानव निर्मित खूबसूरती का आगार है। जिसको देखने के साथ-साथ महसूस भी किया जा सकता है। भारत का कोई भी ऐसा हिस्सा नहीं है जो आपके दिल को ना छू ले। पहली नजर में खराब से खराब लगने वाली जगह भी कब आपके संवेदना को छू लेगी इसका आपको पता भी नहीं चलेगा। यहाँ हर एक जगह का अपना इतिहास है और उससे जुड़ी कथाएँ एवं किंवदन्तियाँ है। आप थोड़ी सी उसमें दिलचस्पी दिखाईए तो आप अपने को उससे जुड़ा महसूस करेंगे। यह सिर्फ इस देश की मिट्टी की खूबसूरती है कि हम जहाँ जाते हैं वहीं के हो जाते हैं।

मुझे भी सन 2014 में हमीरपुर जाने का सुअवसर प्राप्त हुआ तथा लगभग यहाँ चार वर्ष रहने का मौका मिला। हाँ, वही हमीरपुर ! जिसका पहले पहल गूगल भी ठीक-ठीक पता नहीं बता पाता। जिसके बारे में बहुत खोज-बीन करने के बाद कुछ जानकारी मिल पाएगी। ज्योंही आप गूगल के सर्च इंजन पर हमीरपुर टाइप करेंगे, त्योंही वह आपको इसका लोकेशन हिमाचल प्रदेश में बताएगा। इस उत्तर प्रदेश राज्य के हमीरपुर को ढूंढने में आपको मशक्कत करनी पड़ेगी। मुझे भी करनी पड़ी थी, इसको ढूंढने में। इसके बारे में कुछ जानकारी हासिल करने में और यहाँ तक पहुँचने में।

हमीरपुर उत्तर प्रदेश राज्य के अंतर्गत आने वाले चित्रकूटधाम मण्डल का एक छोटा सा जनपद है। जिसका मुख्यालय यमुना और बेतवा के दोआब में स्थित हमीरपुर शहर है। इस शहर का अपना एक ऐतिहासिक महत्व है। अब भी आपको यहाँ हाथी दरवाजा एवं यमुना नदी में डूबा राजा हम्मीर देव के महल के मलवे के रूप में ग्यारहवीं शताब्दी के भग्नावशेष देखने को मिल जाएंगे। सुभाष बाजार में स्थित सोफिया गेट के माध्यम से आप अंग्रेजी हुकूमत की कभी ना खत्म होने वाली दास्तान की अनुगूंज सुन सकते हैं। इस शहर का अपना एक समृद्ध किन्तु बिना प्रमाण का धुंधला इतिहास है। यह शहर समय के थपेड़ों से बनता बिगड़ता रहा है। जिसकी इबारत जमुना और बेतवा की लहरों पर लिखी गई है। यह

के हित में दान कर दिया करते थे और पूछने पर वह कहा करते थे कि मेरी निजी संपत्ति नहीं है, यह तो सब जनता की है। सचमुच में स्वामी जी ने अपने जीवन में कर्मयोगी शब्द को चरितार्थ किया था" सितम्बर सन 1984 को स्वामी जी अपना पार्थिव शरीर त्यागकर ब्रह्मलीन हो गए।

जहाँ पर केन, बेतवा, यमुना कल कल निनाद कर प्रवाहित हो रही हों वहाँ का सांस्कृतिक एवं साहित्यिक परम्परा की जड़ें कितनी गहरी होंगी ? यह सोच कर ही मन प्रफुल्लित हो उठता है....।

शेष अगले अंक में जारी .....!

संदर्भ :

1. गुप्ता, लक्ष्मण प्रसाद, 'जिसे वे बचा देखना चाहते हैं' (2015), अंतिका प्रकाशन, गाजियाबाद : 26
2. हमीरपुर गजेटियर : 5
3. शुक्ल, आचार्य रामचंद्र, 'हिंदी साहित्य का इतिहास' (2008), प्रकाशन संसथान, नई दिल्ली : 37
4. बैरागी, कुंवर, 'प्यासे केन के फुल' (2016) : 33
5. कौशल, बीबा सिंह, 'न्यू राष्ट्रीय स्कूल एटलस' (2013), इंडियन बुक डिपो, न्यू दिल्ली : 83
6. त्रिपाठी केशरी नंदन, 'उत्तर प्रदेश' (2020), बौद्धिक प्रकाशन, इलाहबाद : 27-132
7. मयंक, मंजुल, 'तुन ना आये सितारों की नींद आ गई' (2009) सं. डा. सुरेन्द्र प्रताप सिंह, आराधना ब्रदर्स प्रकाशन, गोविन्द नगर कानपुर : 152
8. सिंह, शुकदेव एवं वाशुदेव, 'कबीर वांग्मय' विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक वाराणसी : 26
9. Apnabharuwasumerpur.blogspot.com/2010
10. www.en.m.wikipedia.org/wiki/rath,_india
11. www.up24.news/hamirpur/uncategorized/pandit-parmanand-a-brave-fighter-for-indian-freedom/
12. www.patrika.com/agra/news/swami-brahmanand-lodhi-full-profile-in-hindi-5452977/

❑❑❑

[भैया जितेन्द्र, मित्र संतोष, डॉ सुरेन्द्र प्रताप सिंह, डाककर्मी भाई अंशुमान पाठक, जिनके सान्निध्य से हमीरपुर गजेटियर की जानकारी मिली। पूर्व लिपिक एवं साहित्यकार कुंवर बैरागी, जीवन संगिनी प्रिया और सभी हमीरपुर के अनाम लोग जिनसे इस लेख को लिखने में मदत मिली, उन सबके प्रति हृदय की अतल गहराईयों से आभार]